Saarth E-Journal

Saarth E-Journal of Research

E-mail : sarthejournal@gmail.com
www.sarthejournal.com

ISSN NO : 2395-339X
Peer Reviewed
Vol.8 No.10

Impact Factor
Quarterly
Jan-Fb-March2023

प्राथमिक शिक्षा में भाषा की भूमिका-एक अभ्यास

नलिना आहिर

सारांश:

किसी व्यक्ति के जीवन में उसकी मातृभाषा के महत्व की सबसे अच्छी और सटीक तुलना करने के लिए माँ के दूध से बेहतर कुछ नहीं। जैसे जन्म के एक या दो वर्ष तक बच्चे के शारीरिक और भावनात्मक विकास के लिए माँ का दूध और स्पर्श सर्वश्रेष्ठ होते हैं वैसे ही उसके संवेगात्मक, बौद्धिक और भाषिक विकास के लिए मातृभाषा या माँ बोली। मातृभाषा की इस भूमिका पर संसार में कोई भी मतभेद नहीं है वैसे ही जैसे माँ के दूध के महत्व, प्रभाव और भूमिका पर कोई मतभिन्नता नहीं है।जीवन व्यापार में भाषा की भूमिका सर्वविदित है। मनुष्य के कृत्रिम आविष्कारों में भाषा निश्चित ही सर्वोत्कृष्ट है। वह प्रतीक (अर्थात कुछ भिन्न का विकल्प या अनुवाद) होने पर भी कितनी समर्थ और शक्तिशाली व्यवस्था है इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि जीवन का कोई ऐसा पक्ष नहीं है जो भाषा से अछूता हो। जागरण हो या स्वप्न, हम भाषा की दुनिया में जीते हैं। हमारी भावनाएं, हास-परिहास, पीड़ा की अभिव्यक्तियों और संवाद को संभव बनाते हुए भाषा सामाजिक जीवन को संयोजित करती है। उसी के माध्यम से हम दुनिया देखते और रचते भी हैं। भाषा की बेजोड़ सर्जनात्मक शक्ति साहित्य, कला और संस्कृति के अन्यान्य पक्षों में प्रतिबिम्बित होती है। इस तरह भाषा हमारे अस्तित्व की सीमाएं तय करती चलती है।

चाबिरुप शब्द:भाषा, प्राथमिक शिक्षा, संस्कृति, विकास, विद्यार्थी।

प्रस्तावना:

बच्चों की प्रारंभिक देखभाल और शिक्षा में मातृभाषा या पारिवारिक भाषा या परिवेश/स्थानीय भाषा का महत्व उन मुट्ठी भर विषयों में है जिस पर पूरी दुनिया के

शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिकों की सर्वानुमति है। इस विषय पर इतने सारे शोध, प्रयोग, अध्ययन हुए हैं, इतनी सारी किताबें लिखी गई हैं कि अब इसे एक सार्वभौमिक निर्विवाद सत्य के रूप में वैश्विक स्वीकृति मिल गई है। शिक्षाविद् जानते हैं कि 6 साल की उम्र तक बच्चों के ८०-८५ प्रतिशत मस्तिष्क का विकास हो जाता है। यह भी अब एक सर्वविदित तथ्य है कि दो से आठ साल की उम्र के बीच कई भाषाएं आसानी से सीख लेने की क्षमता बच्चों में सबसे प्रबल होती है।शोधों ने यह सिद्ध किया है कि जीवन के आरंभिक वर्षों और प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा माध्यम में पढ़ने वाले बच्चों में सर्वश्रेष्ठ संवेगात्मक विकास के साथ साथ सभी विषयों की समझ और अधिगम भी बेहतर होते हैं उन बच्चों की तुलना में जिन्हें अपनी मातृभाषा/परिवेश भाषा से अलग किसी भाषा में पढ़ना पड़ता है। इतना ही नहीं, दूसरी भाषाएं सीखने में भी मातृभाषा/परिवेश भाषा में पढ़ने वाले बच्चे आगे पाए गए उन दूसरी श्रेणी के बच्चों की तुलना में। यानी प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा माध्यम शिक्षा बच्चों को बहुभाषी बनाने में भी श्रेष्ठतर साबित होती है।

भाषा शिक्षण क्या है?

भाषा शिक्षण (Language Teaching) एक प्रक्रिया है या हम कह सकते हैं कि एक माध्यम है जिसकी सहायता से इस बात पर बल दिया जाता है कि बालक को किस प्रकार से पढ़ना-लिखना सिखाया जाए जिससे बालक भाषा का समझ के साथ प्रयोग करना सीख सके।**लेव वाइगोत्सकी के अनुसार –** बालकों के भाषा सीखने में समाज तथा परिवार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भाषा बाल विकास में सहायक होता है तथा शिक्षक द्वारा बालक की इसी प्रवृत्ति का ध्यान रखते हुए शिक्षण नीति अपनाई जानी चाहिए।

भाषाविज्ञानी और शिक्षाविद बच्चों को ऐसी भाषा में पढ़ाने के विचार का समर्थन करते हैं जो बच्चे आसानी से समझते हों। वे मानते हैं कि बच्चा जब स्कूल में आता है तो अपने सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश से काफी कुछ सीखकर आता है। इस सीखने में उसके घर की भाषा भी शामिल होती है। इसलिए बच्चों को शुरुआती कक्षाओं में उनकी भाषा में ही पढ़ाना चाहिए।इससे बच्चों का शिक्षण एक ऐसी भाषा में होना सुनिश्चित किया जा सकेगा जिसके साथ वे सहज होंगे। यानि सुनकर समझने वाले स्तर तक उनका परिचय इस भाषा से होगा। “बच्चों को उसी भाषा में पढ़ाया जानाचाहिए जिसे वे समझते हैं।”

भाषा शिक्षण के उद्देश्य:

भाषा शिक्षण की प्रमुख उद्देश्य और भूमिका निम्नलिखित है:-

- वक्ता के कथन को समझने की योग्यता का विकास कराना भाषा शिक्षण का प्रथम उद्देश्य है।
- समझ के साथ पठान की योग्यता का विकास कराना भी भाषा शिक्षण का उद्देश्य है।
- सहज अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास कराना।
- सुसंगत लेखन का विकास कराना।
- विभिन्न विषयों की भाषा को समझने की योग्यता का विकास कराना।

- भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन क्षमता का विकास कराना।
- सृजनात्मकता का विकास करने में भी भाषा शिक्षण सहायक होता है।
- सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप बालक के भाषा को डालना अभी भाषा शिक्षण का उद्देश्य है।

मातृभाषामें शिक्षा आखिर कब तक?

यहां एक तथ्य पर ध्यान देना जरूरी है कि बच्चा अपने लंबे जीवनकाल में अन्य भाषाओं और संस्कृतियों के संपर्क में भी आयेगा। इसलिए हमें उसे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए तैयार करना जरूरी है। जिसकी जरूरत उन्हें भविष्य में होगी। उदाहरण के तौर पर हिंदी, अंग्रेजी इत्यादि। इसके अभाव में बच्चों को कई तरह की समस्याओं का सामना करना होता है कि क्योंकि उनके शिक्षक बच्चों को क्षेत्रीय भाषाओं में समझाते हैं और उनकी किताबें हिंदी या अंग्रेजी में होती हैं। अंग्रेजी पढ़ाने वाली स्थिति तो और भी ख़तरनाक होती है बच्चे को हर शब्द का हिंदी में अनुवाद करके पढ़ना होता है। चेयर मतलब कुर्सी। ऐसी स्थिति में एक बच्चे को कई तरह की चुनौती का सामना करना होता है और वह उस भाषा में अपनी रुचि खो देता है।बच्चों को सही तरीके से पढ़ना सिखाना भी जरूरी है। पढ़ने को समझ के साथ जोड़कर देखने के लिए प्रोत्साहित करने की जरूरत है। उनको उदाहरणों के माध्यम से भाषा का इस्तेमाल करने की कला से अवगत कराना चाहिए। मसलन समझ का पढ़ने के साथ वेसा ही रिश्ता है जैसा सुनने और समझने का है। यानी दोनों साथ-साथ चलने वाली प्रक्रियाएं हैं।

भाषा का वैभव:

विभिन्न प्रकार के ज्ञान-विज्ञान के संकलन, संचार और प्रसार के लिए भाषा अपरिहार्य हो चुकी है। भाषा के आलोक से ही हम काल का भी अतिक्रमण कर पाते हैं और संस्कृति का प्रवाह बना रहता है इसलिए यह अतिशयोक्ति नहीं है कि भाषा का वैभव ही असली वैभव और आभूषण है- वाग्भूषणम् भूषणम्। वाक् की शक्ति को भारत में बहुत पहले पहचान लिया गया था और वेद के वाक्सूक्त में उसका बड़ा विस्तृत विवेचन मिलता है। परा पश्यंती, मध्यमा और वैखरी आदि वाक् प्रस्फुटन के विभिन्न स्तरों का भी सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है। शब्द की शक्ति को बड़ी बारीकी से समझा गया है और भाषा को लक्ष्य कर जो चिंतन परम्परा शुरू हुई वह पाणिनि द्वारा व्यवस्थित हुई और आगे चलकर उसका बड़ा विस्तार हुआ। शिक्षा, व्याकरण, काव्य शास्त्र, नाट्य शास्त्र तथा तंत्र आदि में भाषा के प्रति व्यापक, गहन और प्रामाणिक अभिरुचि मिलती है।ध्वनि रूपों से गठित वर्णमाला में अक्षर (अर्थात जो अक्षय हो!) होते हैं और शब्द ब्रह्म की उपासना का विधान है। इन सबको देखकर यही लगता है कि भारतीय मनीषा भाषा को लेकर सदा गंभीर रही है और इसी का परिणाम है कि सहस्राधिक वर्षों से होते रहे विदेशी आक्रांताओं के प्रहार के बावजूद यह ज्ञान राशि अभी भी जीवित है।

भाषा से विकास:

यह तथ्य अकेला ही पर्याप्त है यह सिद्ध करने के लिए कि दुनिया के किसी भी स्थान-समाज में जन्म लेने वाले बच्चों के लिए मातृभाषा/परिवेश/स्थानीय भाषा ही सर्वांगीण विकास तथा सभी विषयों के बारे में सीखने के लिए सर्वोत्तम माध्यम होती है। यह बात सुदूर जंगलों में रहने वाले वनवासी बच्चों पर भी उतनी है लागू होती है जितनी सबसे विकसित, संपन्न समाजों-देशों के बच्चों पर।यह बात ध्यान देने योग्य है कि भाषाविदों के अनुसार समाज विकसित या अविकसित हो सकते हैं लेकिन कोई भी भाषा अविकसित नहीं होती। संसार की हर भाषा में अपने बोलने-बरतने वालों की सभी संचार-अभिव्यक्ति-आवश्यकताओं को पूरा करने की अन्तर्निहित क्षमता होती है।

यह बात इसलिए केन्द्रीय महत्व की है कि बहुत से ऐसे देशों-समाजों में जो आधुनिक विकास, संपन्नता, तकनीकी-आर्थिक प्रगति में विकसित देशों से पिछड़ गए हैं, लोगों के मन में यह बात बिठा दी जाती है कि उनकी अपनी देशज, स्थानीय भाषाएं विकसित देशों की तथाकथित विकसित भाषाओं की तुलना में अविकसित, गरीब और असमृद्ध हैं। यह स्थिति ज्यादातर उन देशों की है जो किसी न किसी औपनिवेशिक देश की दासता के शिकार रहे हैं। अपनी भाषा-संस्कृति-समाज-समझ की हीनता का यह भाव इन समाजों में अपनी विरासत, अपनी हर बात को लेकर एक गहरा हीनता-भाव, आत्म-लज्जा भर देता है। उनके आत्म-विश्वास को खंडित कर देता है।इस औपनिवेशिकता-जनित आत्महीनता का एक परिणाम यह होता है कि ऐसे विजित समाज अपनी भाषा, अपनी सांस्कृतिक पहचान, तौर-तरीकों, परंपराओं, पद्धतियों, ज्ञान-परंपराओं को लेकर गहरे संशय और अविश्वास से भर जाते हैं। उन्हें विजेता समाज, संस्कृति, भाषा, शिक्षा, जीवन शैली श्रेष्ठतर लगने लगते हैं। परिणामतः वे अपने पारंपरिक तौर तरीके छोड़ कर विजेता या प्रभुत्वशाली वर्ग के तौर तरीके अपनाने लगते हैं। उनकी नकल करने लगते हैं। विश्व के सभी पूर्व-औपनिवेशित देश-समाज इस आत्महंता चेतना से ग्रस्त हो गहरी और व्यापक सांस्कृतिक-बौद्धिक-शैक्षिक दासता के शिकार बने दिखते हैं भले ही उन्हें राजनीतिक स्वाधीनता मिल गई हो।

समापन:

"अपनी भाषा बोलने के लिए एक बच्चे को सज़ा देना उस भाषा के विनाश का आरंभ है।" (भाषाई अधिकारों पर विश्व सम्मेलन, बारसेलोना में बोलते हुए बेनिन के एक प्रतिनिधि, जून 1996)भारतीय मानस पर अंग्रेजी और अंग्रेजियत के इस प्रभाव ने आम शिक्षित भारतीय को पश्चिमपरस्त, पश्चिमी सभ्यता, ज्ञान-विज्ञान, तकनीक तथा चिंतन का मुखापेक्षी बना कर देश को एक नकलची राष्ट्र बना दिया है। पराई भाषा में मौलिक चिंतन नहीं हो सकता। वह अपनी भाषा में ही संभव है। लेकिन अंग्रेजी के वर्चस्व ने सारी भारतीय भाषाओं को बोलने वालों, उनके परिवेश, परंपराओं, जीवनशैलियों को इस आधुनिक अंग्रेजी-परस्त युवा के लिए पिछड़ा हुआ, अनाधुनिक और शर्म का कारण बना दिया है। इसी कारण भारत में ज्ञान-विज्ञान के उच्चतर क्षेत्रों में नवाचार, मौलिक चितन, शोध, आविष्कार इतने कम हैं।भारत को यदि इस ज्ञान युग में आधुनिक, प्रगतिशील, समृद्ध और ज्ञान-विज्ञान में अग्रणी

बनना है तो उसे अंग्रेजी का यह मूर्खतापूर्ण मोह छोड़ कर अपनी ९०% प्रतिभाओं को उनकी अपनी भाषाओं में शाला-पूर्व स्तर से ही उत्कृष्टतम शिक्षा देकर उनकी मौलिकता तथा रचनाशीलता को उच्चतम प्रस्फुटन के अवसर देने होंगे। अपनी-अपनी मातृ/परिवेश/प्रादेशिक भाषाओं में शिक्षा-संस्कार तथा स्वस्थ आत्म-बोध प्राप्त करके ही ये नई पीढियाँ भारतीय नवोन्मेष का नया युग निर्मित कर सकेंगी।

सौभाग्य से नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने दशकों बाद भारतीय राष्ट्र के नवनिर्माण में भारतीय भाषाओं की इस अनिवार्य भूमिका को पहचाना है और प्राथमिक से लेकर उच्चतम स्तर की शिक्षा में उनको केन्द्रीय स्थान दिया है। अगले १५-२० वर्षों में इस नई शिक्षा व्यवस्था से आधुनिक ज्ञान-विज्ञान, तकनीक तथा एक पुनर्प्राप्त सांस्कृतिक गर्ब और सभ्यता-बोध से संपन्न होकर जह भावी भारतीय संसार में पदार्पण करेंगे तब भारत की वास्तविक प्रतिभा का चमत्कार संसार देखेगा।

संदर्भ सूची

1. https://rkrstudy.net/bhasha-shikshan-kya-hai/
2. सफाया, रघुनाथ, हिन्दी शिक्षण विधि, पंजाब किताब घर, जालंधर।
3. मुखर्जी, संध्या, भाषा शिक्षण, प्रकाशन केंद्र, लखनऊ।
4. पाण्डेय, रामशकल, हिन्दी शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. सिंह, सावित्री, हिन्दी शिक्षण, गया प्रसाद एण्ड संस, आगरा।

नलिना आहीर